।। श्री हरि :।।

आंतरराष्ट्रीय पुष्टिमार्गीय वैष्णव परिषद

श्री वल्लभ कृपा कीर्तन मंडल

प्रस्तुति

कीर्तन माधुर्य

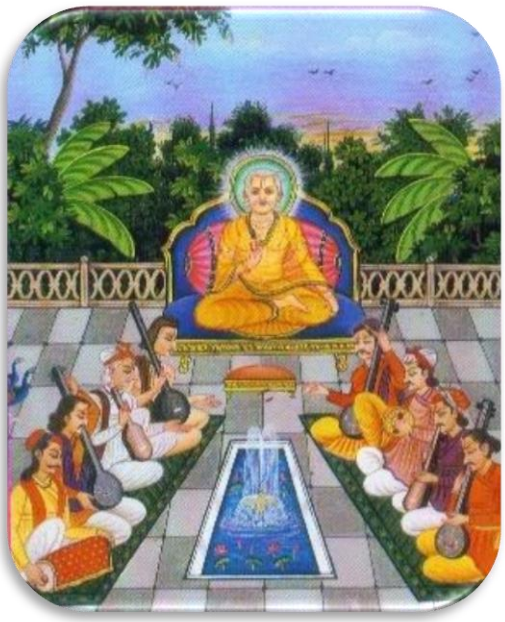

निवेदक

जमानप्रसाद शर्मा

कीर्तनाध्यक्ष

परिषद कार्यालय

१५ इ , लोहाणा निवास, शंकर बारी लेन, जे एस एस रोड के पास ,

चीरा बाजार , मुंबई - ४०००० २. संपर्क : ०२२ २२०७६०९८

www.vaishnavparishad.org

कीर्तन माधुर्य

प्रिय वैष्णवो,

इस पुस्तक के लेखन का एक ही कारण है। क्यों कि मेरे पास न साधन है, नहीं सेवा, मेरे पास तो केवल केवल और केवल कीर्तन गायन है। इसीसे शायद प्रभू रीझ जाँय

इसी कामना के साथ

सभी को जय श्रीकृष्ण

निवेदक

जमुना प्रसाद शर्मा

कीर्तन माधुर्य

अनुक्रमनिका

१. आनंद भैरव

प्रात समें घर घरते आई

२. घानी

अहो विधना

३. सोहनी

प्रगटी नागरी रुप निधान

४. भीम पलासी

वल्लभ सुतके चरणं

५. गारा

ढाढिन नाचे रंग भरी

६. भिन्न षडज

मैया मोहे माखन मि श्री

७. किरमानी

बृन्दावन क्योंभये हम मोर

८. खंभावती

मुरली के ढंग ऐसे माई

९. पीलू

राधिकाबर चरण

१०. हंसध्वनी

श्री गोवरधनकी तरहटी

कीर्तन माधुर्य

आनंद भैरव

भैरव के घाट में,
घैवत शुध्द लगाय।।
सम वादी संवादि सों
आनंद भैरव गाय ।।

इसका थाट है भैरव जाती है संपूर्ण
म वादी संवादि स है
इसके आरोह अवरोह :-
स, रे, ग, प, ध, नी, सं
स, नी, ध, प, म, ग, रे, स

पद

प्रात समें घर घरते, आई गोकुल नारी
अपनों कृष्ण जगाय यशोदा, आनंद मंगल कारी
सब बृज कुल के प्रान गोवरधन
या सुतकी बलिहारी

आसकरण प्रभू मोहन नागर
गिरिगोवरधन धारी

आनंद भैरव

ताल - झपताल

धप ध	प म ग	म ग	रे रे स
प्रा....	त - स	में - -	घ - र
ध़ स	रे रे ग	म ग	रे रे स
घ र	ते - -	आ -	ई - -
स रे	ग म प	ध प	म ग रे
गो -	कु - ल	ना -	- - री
x	२	०	३

अन्तरा

x	२	०	३
म प	ध ध सं	रें रें	सं सं सं
अ प	नों - -	कृ -	ष्ण -
सं रें	गं रें सं	नी ध	प म ग
गा -	य - य	शो -	दा - -
घ सं	नी घ प	म ग	रे रे स
आ -	नं - द	मं -	ग - ल
सा रे	ग म प	म ग	रे रे स
का -	- - -	री -	- - -

स्थायी

स रे	**ग म प**	**ध प**	**म ग रे**
स ब	बृ - ज	कु ल	के - -
ग रे	**स स स**	**ध़ ध़**	**स स स**
प्रा -	न - गो	व र	ध - न
रे रे	**स स स**	**ग रे**	**स स स**
या -	सु - त	की -	ब - लि
ग रे	**ग म प**	**म ग**	**रे रे स**
हा -	- - -	री -	- - -

२

राग धानी

वादी ग संवादि नी

गनी सुर कोमल जान के

गध वर्जित कर गाईये

औडव धानी गान।।

इस राग का थाट है - काफी

जाती - औडव

गनी कोमल

आरोह अवरोह :-

सा, ग, म ध नी सं

सं नी ध म ग स

पद

अहो बिघना तोपे अचरा पसार माँगो,

जनम जनम दी जै याही बृज बसवौ ।।१।।

अहीर की जात, समीप नंद गृह,

घरी घरी घनश्याम हेर हेर हसवौं ।।२।।

हधि के दान मिस बृज की बीथन में,

झक झोरन अंग अंग को परसवो ।।

'छीतस्वामी' गिरधरन श्री विट्ठल सरदरैन

रस रास को विलस वो

पद

मुखडा ताल - त्रिताल

X	२	०	३
नी नी सं रें	**सं नी घ प**	**म ग म प**	**म ग स स**
अ हो वि ध	ना - तो पे	अ च रा प	सार मा गू
स ग म प	**म ग स नी**	**स स स स**	– – – –
ज न म ज	न म दी जे	यो ही बृ ज	ब स वो

अन्तरा

०	३	X	२
ग म ध नी	**सं नी सं सं**	**नि नी सं रें**	**नी ध प प**
अ ही र की	जा - - त	स भी - प	नंद गृह
सं सं सं सं	**नि सं नी ध**	**म ग म प**	**म ग स स**
घरी घरी	घन श्याम	हे र हेर	ह स वो –

स्थायी

X	२	०	३
नि स ग म	**प ग प प**	**म ग म प**	**म ग स स**
द हि के दा	- न मिस	बृ ज की बी	थे न में –
स ग म प	**म ग स नी**	**स स स स**	**स स स स**
झ क झो -	र न अंग	अं ग को प	र स वो

❸

राग सोहनी

तीवर कोमल रिषभ लै

पंचम वर्जित गान ।।

ध ग वादी संवादि से

की यौ सोहनी गान ।।

थाट - मारवा

जाती षाडव वर्जित

आरोह, अवरोह :-

सग, म॑ध, नीसं

संरे॒ंसं, नीध, म॑ध, म॑गरे॒स

पद

प्रगटी नागर रुप निधान ।।

देख देख बूझत जो परस्पर,

नही त्रिभुवन में आन ।।१।।

उपमा को जे जे कहियत है,

ते जु भये निरमान ।।

कुँभन दास प्रभु लाल गिरधार की,

जोरी सहज समान ।।२।।

राग सोहनी

मुखडा ताल - त्रिताल

१	३	x	२
स म ग ग	**म ध म ध**	**सं सं सं सं**	**नी रें सं सं**
ना - ग री	रु - प नि	धा - न	प्र ग टी -
नी रें नी ध	**म ध म ग**	**म ग रे स**	**ग रे स स**
ना - ग री	रु - पनि	धा - - न	प्रगटी

अन्तरा

ध ध म ध	**सं सं सं सं**	**नि रें गं गं**	**म गं रें सं**
दे - ख दें	- ख बू -	झ त जो प	र स प र
सं सं नी ध	**म ध म ग**	**म ध म ग**	**म ग रे स**
नही त्रिभु	व न मे -	आ - - न	प्र ग टी

स्थायी

ध़ नी़ स ग	म **म** ग ग	**म ध म ग**	**म ग रे स**
उ प म -		जे - कहि	य त है -
म ध म ग	**रे रे स स**	**नि ध नी स**	**रे रे स स**
ते - जुभ	ये - निर	वा - - न	प्र ग टी

४

राग भीम पलासी

जब काफी के थाट में
चढते रिषभ कौ त्याग ।।
कोमल गनी संवाद सों
भीग पलासी राग ।।

घाट - काफी
जाती - औडव - संपूर्ण
वादी संवादी - म स

पद

वल्लभ सुत के चारण मजौ ।।
नंद कुमार भजन सुख दायक,
पतितन पावन करण।।
दूर किये कलि कपट वेद विधि
मत्त प्रचंड विस्तरन ।।१।।
अतुल प्रताप महिमा नाम यश
तोक ताप शोक हरणं ।।२।।
पुष्टि मर्याद, भजन सुख सीमा
निज जन पोषन करणं,
नंददास प्रभू प्रगट भये दोऊं, श्री विट्ठलेश गिरधरन

भीम पलासी

मुखडा त्रिताल

१	३	x	२
प सं नी प	**म प ग म**	**प प ग म**	**ग रे स स**
व – ल्ल भ	सु त के -	च र णं -	भ जौ श्री -

अन्तरा

म प ग म	**प नी सं सं**	**प नी सं गं**	**रें रें सं सं**
नं - द - कु	मा - र भ	ज न सु ख	दा - यक
प प गं गं	**रें रें सं सं**	**नी नी सं नी**	**ध ध प प**
पति त न	पा - व न	क र णं -	भ जो श्री -

स्थायी

नी़ स ग म	**प म प प**	**म ग म प**	**म ग स स**
दूं - र कि	ये - कलि	क प - ट	वे द वि धि
स ग म प	**म ग स नी़**	**स स स स**	- - - -
म - त्त प्र	चं ड वि स्	ता र णं -	- - - -

राग गारा

कोमल तीवर लगत है
गनी के दोनो रुप ।।
गनी वादी संवादि ते,
गारा राग अनूज।।
थाट - खमाच
जाती - संपूर्ण - वादी ग - - संवादी नी
आरोह, अवरोह :
स रे ग रे, ग म प ध, नी सं
सं नी ध नी, प म ग म, ग रे स

पद

ढाढिन नाचें रंग भरी
बृज रानी की कूरव सिरानी, सब सुख फलन फरी ।।१।।
गृह गृहत गोपिनजुरिआई, देखन कौतिकरी ।।
होत बधाई मंगल गावत, देत दान सगरी ।।२।।
तब जसुमत सुंदर पहराई, हर्शखत मोद भरी।।
हँसि बोली यो कहत मोद सो, देखन लाल अरी।।३।।
तब यशुमति लै लाल दिखायो, शोभा सिधु भरी।।
पद्मनाभ सह चरी निरखत, वारत सर्वश्वरी।।४।।

राग गारा

मुखडा ताल - दादरा

नी नी नी	ध नी सं नी	म प म	प ध प म	ग ग स
ना - चे	रं - ग भ	री - -	ढा - ढिन	- - -

अन्तरा

ग म प नी	सं नी सं सं	नि नी नी सं	ध ध प प
बृ ज रा	नी - की	कू -ख सि	रा - नी -
म म प ध	प म ग स	ग म प प	- - - -
सब सुख	फल न फ	री - - -	- - - -

स्थायी

स स ग म	प म प प	म म प ध प म	म ग स
गृह गृह	त - गो -	पिन जु र आ -	आ ई -
स ग म प	ग म प नी	ध ध प प	- - - -
दें - रव न	को - ती क	री - - -	- - - -

६

भिन्न षड़ज

ग स संवाद बनायकर, रे प सुर दिये निकार

भिन्न षड़ज पहचानिये औडव रुप संभार

इसका थाट बिलावल है, जाती है औडव

इस राग के आरोह, अवरोह :-

स, ग, म, ध, नी, स

सं नी ध, म, ग, स

इसका वादी है - ग

संवादी है - स

जाती है औडव

पद

मैया मोहे माखन मिश्री भावै।

मीठो दहि मिठाई मधु घृत

अपने करसों क्यो न खवावें ।।१।।

कनक दोहनी देकर मेरे

ओटयो दूध धेनु धौरीकौ

भर के कटौरा क्यों न पिवावे ।।२।।

अजहू ब्याह करत नहीं मेरौ

तो हे नींद क्यों आवै ।।

चत्र भुज प्रभु गिरधरजी की बाते सुन

ले अछंग पय पान करावै ।।३।।

भिन्न षड़ज

मुखाडा त्रिताल

०	x	३	२
सं ध ग म	**ग ग स स**	**ध़ ऩी स ग**	**म ग म म**
मै या मो हे	मा - ख न	मि - श्री -	भी - व त

अन्तरा

ग म ध नी	**सं नी सं सं**	**नि नि नी सं**	**ध ध प म**
मी ठो	द धि - मि	ठा - ई -	म धु धृ त
नी नी नी स	**ध ध प म**	**ग ग रे स**	**ग म ध नी**
अ प ने -	क र सो -	क्यो न ख	वा - बै -

स्थायी

ध़ ऩी स ग	**म ग म म**	**ग ग म ध**	**म ग रे स**
क न क दो	- ह नी -	दे - क र	मे - रे -
ग म ग स	**ऩि स ध़ ऩी**	**स ग म म**	**भ म ग ग**
गो - दो -	ह न मो हे	क्यों - न सि	खा - वे -
०	x	२	३

७

किरमानी

घरे संवाद बनाय के
गध कोमल ही लगाय
आरोहन ग छांड के
किरमानी राग ही गाय
इसका वादी है स संवादी रे
गायन समय दिनका प्रथम प्रहर
आरोह : स ग म ध, नी ध सं
अवरोह : सं नी ध प, म ग रे स

पद

वृन्दावन क्यों न भये हम मोर।।
करत निवास गोवर्धन ऊपर
निरखत नंद किशोर ।।१।।
क्यों न भये बंशीकुल सजनी
अधर पीवत घन घोर ।।
क्यों न भये गुँजाबन बेली
रहत श्यामजू की ओर
क्यो न भये मकराकृत कुंडल
श्याम श्रवन झक झोर
परमानंद दासको ठाकुर, गोपिन के चितकोर ।।२।।

किरमानी

मुखडा ताल - त्रिताल

०	x	२	३
नी नी सं रें	**नी सं नी ध़**	**म ग़ म प**	**म ग़ स स**
क्यों - न भ	ये - ह म	मो - - र	बृन्दावन
स ग़ म प	**म ग़ स नी**	**स स स स**	**ध़ प म ग स**
क्यो - न भ	ये - ह - म	मो - - र	बृं दा व न

अन्तरा

ग़ म ध़ नी	**सं नी सं सं**	**नि नि सं सं**	**गं गं सं सं**
क र त नि	वा - स गो	व र ध न	ऊ - प र
नी नी सं रें	**नी ध़ प प**	**म ग़ म प**	**म ग़ स ऩी**
नि र ख त	नं - द कि	क्यो न ख	बृं दा वन

स्थायी

ऩी स ग़ म	**प म प प**	**म ग़ म प**	**म ग़ स स**
क्यों - न म	ये - बँ -	शी - कुल	स ज नी -
स ग़ म प	**म ग़ स ऩी**	**स स स स**	**- - - -**
अ ध र पी	व त ध न	घो - - र	- - - -

राग खंभावती

दोउ निषाद खंबावती

उतरत रे न सुहाय

संपूरण षाडव कही

ग ध संवाद बनाय ।।

थाट :- खमाच

जाती : संपूर्ण

दानो - नी

आरोह, अवरोह :

स ग म पनी ध सं

सं नी ध प, मग मस

पद

मुरली के ऐसे ढंग माई ।।

जबते श्याम परे वसवाके

हमहि सबन बिसराई।।१।।

अपने गुन यह प्रगट जनायौ,

निठुर काठ की जाई ।।

अपने आप दहे कुल अपनौ,

सो गुन गुन पछिताई ।।२।।

जैसे निठुर आपने घरको, औरन को क्यों माने।।

सूर बडी यह आप स्वारथी निपट राग करगाने

राग खंभावती

मुखडा ताल - त्रिताल

३	x	२	०
ग म ध नी	**सं सं सं सं**	**नी नी सं नी**	**ध ध प म**
मु र ली -	के - ढं ग	ए- से -	मा - ई -

अन्तरा

३	x	०	३
ग म ध नी	**सं नी सं सं**	**नि नी सं नी**	**ध ध प म**
ज ब ते -	श्या - म प	रे - बो ल	के - ब स
नी नी सं नी	**ध ध प म**	**म म म म**	**ग म ध नी**
ह म ही स	ब न वि स	रा - ई	- - - -

स्थायी

०	३	x	२
स स ग ग	**म म म म**	**ग ग ग म**	**रे रे स स**
अ प नो -	गु न य ह	प्र ग ट ज	ना - यो -
ऩि स ध़ ऩी	**स ग म म**	**ग म ध नी**	**ध ध म म**
नि ठु र का	- ठ की -	जा - - -	ई - - -

९

राग पीलू

ग ध नी तीनों सुरन के
कोमल तीवर रुप
ग, नी वादी संवादि लख,
पीलू राग अनूप ।।

थाट - काफी
जाती - संपूर्ण, गधनी के दोनों रुप
आरोह - अवरोह :-
स, रे ग, म प ध प, नी ध प सं
सं नी ध प म ग रे स

पद

ध नि ए श्री राधिकावर चरण।।
सुमग शीतल अति सुकोमल
कमल के से बरन ।।१।।
नख चंद्र - चारु अनूप राजत,
विविध शोभा धरन ।।२।।
कुनित नुपर कुंज विहरत,
परम कौतुक करन ।।
रसिक लीला मन मोद कारी,
विरिह सागर-तरन
दास परमानंद छिन छिन
श्याम ही की शरण ।।

राग पीलू

मुखडा ताल त्रिताल

०	३	x	२
ग म ध प	**ग़ ग़ स नी़**	**स स स स**	**ग म प प**
रा - - धि	का - ब र	च र न -	ध नि ध नि

अन्तरा

x	२	०	३
म प नी नी	**सं नी सं सं**	**नि नी सं सं**	**नी़ ध प प**
सु म ग -	शी - त ल	अ ति	को - म ल
ग म ध प	**ग़ ग़ स नी़**	**स स स स**	**ग म प प**
क म - ल	के - से -	बर - न	- - - -

स्थायी

स ग म प	**प प प प**	**ग म ध प**	**ग़ ग़ स नी़**
न ख चं द	रु- - प	अ - नू - प	रा - ज त
ग म ध प	**ग ग स नी़**	**स स स स**	**ग म प प**
वि वि ध -	शो - भा -	ध र - न	ध न ए श्री

हँस ध्वनी

जब हि बिलावल घाट में
मध सुर वर्जित कीन्ह
स प संवाद बनाय कर
हंस ध्वनी कौ चीन्ह ।।

घाट बिलावल
जाती औडव गनी दोनो रुप
आरोह - अवरोह :-
सं रे, ग प ग रे, ग प नी सं
स नी प ग रे स

पद

श्री गोवर्धन की रहिये तरहटी।
नित्य प्रति मदन गुपाल लाल के,
चरण कमल चित लहिये ।।१।।
तन पुलकित बृजरज में लोटत,
गोविंद कुंड में नहिये,
रसिक प्रीतम हित - चित की बाते,
गिरधारीजी सो कहिये।

हँस ध्वनी

मुखडा ताल त्रिताल

०	३	x	२
नि सं गं रें	**नी ध प प**	**ग र ग प**	**ग रे स स**
गो - व र	ध न की -	र हि ये त	र ह ती श्री

अन्तरा

ग प सं नी	**सं सं सं सं**	**प नी सं गं**	**रें रें सं सं**
नि त्य प्र ति	म द न गु	पा - - ला	- ल के -
सं सं नी नी	**प प ग स**	**रे रे रे रे**	**ग प नी सं**
च र न क	म ल चि त	ल हि ये त	र ह ती श्री

स्थायी

स स प ग	**प प प प**	**ग प सं नी**	**प प ग स**
त न पुल	कित बृज	र ज में -	लो - ट - त
ग प स नी	**प प ग स**	**रे रे रे रे**	**- - - -**
गो - विं द	कुं ड में -	ल हि ये त	र ह टी श्री

आंतरराष्ट्रीय पुष्टिमार्गीय वैष्णव परिषद
श्री वल्लभ कृपा कीर्तन मंडल
द्वारा प्रकाशित कीर्तन पुस्तिका

कीर्तन अभ्यास क्रम

१. प्रवेशिका २.प्रबोध
३.सुबोध ४.प्रवीण
५.विशारद ६.कीर्तन रत्न ७.कीर्तन माधुर्य

कीर्तन संग्रह

१.ग्रीष्म युगल सुखदाई
२.श्याम घटा घिर आयी
३.शीतकाल सुहावनो
४.जुलिये नेक धीरे धीरे
५.श्याम सजनी शारद रजनी
६.होली खेले व्रजराज
७.आज वधाई को दिन निको
८.राग रंग रंगी रस्को रास रंगी है
९.उत्सव - मनभावन त्योवहार मानवो गिरिधर जु के संग
१०.विवाह खेल - दूल्हे मगन गोपाल राधे जु नव दुल्ही

परिषद कार्यालय
१५ इ , लोहाणा निवास, शंकर बारी लेन,
जे एस एस रोड के पास ,
चीरा बाजार , मुंबई - ४००००२.